आर्थिक उदारीकरण के 30 वर्ष

प्रलिम्सि के लिये:

क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी, वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक रिपोर्ट, आर्थिक उदारीकरण, भुगतान संतुलन, राजकोषीय घाटा

मेन्स के लिये:

तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में आर्थिक उदारीकरण सुधारों की आवश्यकता एवं वर्तमान परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में आर्थिक उदारीकरण सुधारों की 30वीं वर्षगाँठ पर भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने देश की वृहद्-आर्थिक स्थिरता पर चिंता व्यक्त की।

- उनके अनुसार, कोविड-19 महामारी से उत्पन्न मौजूदा आर्थिक संकट वर्ष 1991 के आर्थिक संकट की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण है और राष्ट्र को सभी भारतीयों के लिये एक सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करने हेतु प्राथमिकता के क्षेत्रों को पुनर्गठित करने की आवश्यकता होगी।

प्रमुख बिंदु

1991 का संकट और सुधार:

- **1991 का संकट:** वर्ष 1990-91 में भारत को गंभीर भुगतान संतुलन (BOP) संकट का सामना करना पड़ा, जहाँ उसका विदेशी मुद्रा भंडार सिर्फ 15 दिनों के आयात के वित्तपोषण हेतु पर्याप्त था। साथ ही अन्य कई कारक भी थे जो BOP संकट का कारण बने:
  - **राजकोषीय घाटा:** वर्ष 1990-91 के दौरान राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 8.4% था।
  - **खाड़ी युद्ध-I:** वर्ष 1990-91 में कुवैत पर इराक के आक्रमण के कारण तेल की कीमतों में वृद्धि से स्थिति विकट हो गई थी।
  - **कीमतों में वृद्धि:** मुद्रा आपूर्ति में तेज़ी से वृद्धि और देश की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण मुद्रास्फीति दर 6.7% से बढ़कर 16.7% हो गई।
- **1991 के सुधारों की प्रकृति और दायरा: वर्ष 1991 में वृहद-आर्थिक संकट से बाहर निकलने के लिये भारत ने एक नई आर्थिक नीति शुरू की, जो एलपीजी या उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण मॉडल पर आधारित थी।**
  - तत्कालीन वित्त मंत्री मनमोहन सिंह वर्ष 1991 के ऐतिहासिक उदारीकरण के प्रमुख वास्तुकार थे।
  - LPG मॉडल के तहत व्यापक सुधारों में शामिल हैं:
    - **औद्योगिक नीति का उदारीकरण:** औद्योगिक लाइसेंस परमिट राज का उन्मूलन, आयात शुल्क में कमी आदि।
    - **निजीकरण की शुरुआत**: बाज़ारों का विनियमन, बैंकिंग सुधार आदि।
    - **वैश्वीकरण:** विनिमय दर में सुधार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और व्यापार नीतियों को उदार बनाना, अनिवार्य परिवर्तनीयता संबंधी कारण को हटाना आदि।
  - वर्ष 1991 से 2011 तक देखी गई उच्च आर्थिक वृद्धि और वर्ष 2005 से 2015 तक गरीबी में पर्याप्त कमी के लिये इन सुधारों को श्रेय दिया जाता है तथा उनकी सराहना की जाती है।

//

वरष 2021 का संकट:

- वरल्ड इकोनॉमकि आउटलुक रपिोरट (World Economic Outlook Report), 2021 में कहा गया है कभिारतीय अरथव्यवस्था के वरष 2021 में 12.5% और वरष 2022 में 6.9% की दर से बढ़ने की उम्मीद है।
  - हालाँकमिहामारी के कारण अनौपचारकि क्षेत्र में बड़े पैमाने पर बेरोज़गारी और दशकों की गरिावट के बाद गरीबी बढ़ रही है।
- स्वास्थ्य और शक्षिा जैसे सामाजकि क्षेत्र पछिड़ गए हैं जनिमें पुनः सुधार करने में हमारी आर्थकि प्रगतअिसमरथ साबति हो रही है।
  - महामारी के दौरान बहुत से लोगों की जान चली गई, साथ ही कई लोगों ने अपनी आजीवकिा खो दी जो कफिाफी दुखद अनुभव रहा।
- इंस्पेक्टर राज (Inspector Raj) ई-कॉमरस संस्थाओं के लयि नीतकि माध्यम से वापसी करने के लयि तैयार है।
- भारत, राजकोषीय घाटे के वत्तिपोषण के लयि भारतीय रज़िरव बैंक (RBI) से अत्यधकि उधार लेने या धन (लाभांश के रूप में) नकिालने जैसी स्थति में पहुँच गया है।
- प्रवासी श्रम संकट ने वकिास मॉडल में रुकावट डाल दी है।
- भारतीय वदिश व्यापार नीतफिरि से व्यापार उदारीकरण पर संदेह कर रही है, क्योंकभिारत पहले ही क्षेत्रीय व्यापक आरथकि भागीदारी (Regional Comprehensive Economic Partnership- RCEP) से बाहर नकिलने का फैसला कर चुका है।

आगे की राह

- वरष 1991 के सुधारों ने अरथव्यवस्था को संकट से उबारने में मदद की। यह समय नए सुधार एजेंडे की रूपरेखा तैयार करने का है जो न केवल जीडीपी को पूरव-संकट के स्तर पर वापस लाएगा, बल्कयिह भी सुनश्चिति करेगा कवििकास दर महामारी में प्रवेश करने के समय की तुलना में अधकि हो।

स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस